शब्दालंकार

1 अनुप्रास - वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं। आवृत्ति का अर्थ किसी वर्ण का एक से अधिक बार आना है।
जैसे - "चारु चंद्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल-थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है, अवनि और अंबर तल में।"
उपरोक्त उदाहरण में 'च', 'ल' 'न' और 'अ' की आवृत्ति हुई है। इस आवृत्ति से संगीतमयता आ गई है।
अनुप्रास के कई प्रकार हैं —

(क) छेकानुप्रास - जहाँ पर स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार हो वहाँ छेकानुप्रास होता है। जैसे -
"बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।।"

(ख) वृत्यानुप्रास - जब एक व्यंजन की आवृत्ति अनेक बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास होता है। जैसे
सेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।

(ग) लाटानुप्रास - जहाँ समानार्थक शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में अन्तर हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।
जैसे - "पूत कपूत, तो क्यों धन संचय?
पूत सपूत, तो क्यों धन संचय?"

2. यमक अलंकार - जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। यमक का अर्थ 'युग्म' अर्थात् दो होता है।

Scanned with CamScanner

जैसे - कनक - कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय,
यह खाये बौराय जग, वह पाये बौराय।
यहाँ एक कनक का अर्थ धतूरा है और दूसरे का अर्थ सोना।

तीन बेर खाती थी वो, तीन बेर खाती थी
यहाँ प्रथम 'बेर' का अर्थ समय और द्वितीय 'बेर' का अर्थ फल है।

<u>श्लेष</u> - 'श्लेष' का अर्थ होता है चिपका हुआ। जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है

जैसे - रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै, मोती मानुष चून॥
यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ हैं मोती के लिए 'चमक' मनुष्य के लिए प्रतिष्ठा और चूना के लिए सामान्य जल है।

अर्थ और शब्द दोनों पक्षों पर 'श्लेष' के लागू होने के कारण आचार्यों में विवाद है कि इसे शब्दालंकार में रखा जाए या अर्थालंकार में।

पूनम कुमारी
अध्यक्ष - हिन्दी विभाग,
एस. बी. कॉलेज,
आरा

Scanned with CamScanner